

QUESTION AND ANSWERS :

1. फ़ादर की उपस्थिति देवदार Tall evergreen tree की छाया जैसी क्यों लगती थी?

उत्तर:- फ़ादर बुल्के मानवीय करुणा से ओतप्रोत विशाल हृदय वाले और सभी के कल्याण की भावना रखने वाले महान व्यक्ति थे। देवदार का वृक्ष आकार में लंबा-चौड़ा होता है तथा छायादार भी होता है।

फ़ादर बुल्के का व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही है। जिस प्रकार देवदार का वृक्ष लोगों को छाया देकर शीतलता प्रदान करता ठीक उसी प्रकार फ़ादर बुल्के भी अपने शरण में आए लोगों को आश्रय देते थे।

हर व्यक्ति उनसे सहारा और स्नेह पा सकता था तथा दुःख के समय में सांत्वना consolation के वचनों द्वारा उनको शीतलता प्रदान करते थे।

2. फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग inseparable हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?

उत्तर:- फ़ादर बुल्के पूरी तरह से भारतीय संस्कृति को आत्मसात assimilate कर चुके थे। वे भारत को ही अपना देश मानते हुए यहीं की संस्कृति में रच-बस गए थे। वे हिन्दी के प्रकांड विद्वान थे एवं हिन्दी के उत्थान के लिए सदैव तत्पर everready रहते थे। उन्होंने हिन्दी में पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त "ब्लू-बर्ड " तथा "बाइबिल "का हिन्दी अनुवाद भी किया तथा अपना प्रसिद्ध अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश Dictionary भी

तैयार किया। उनका पूरा जीवन भारत तथा हिन्दी भाषा पर समर्पित था। अतः हम यह कह सकते हैं कि फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

3. पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे फ़ादर बुल्के का हिन्दी प्रेम प्रकट होता है?

उत्तर:- फ़ादर बुल्के के हिन्दी-प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने सबसे प्रमाणिक अंग्रेजी-हिन्दी कोश तैयार किया। भारत आकर उन्होंने कलकत्ता से हिन्दी में बी.ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. किया। उन्होंने “रामकथा : उत्पत्ति और विकास।” पर शोधresearch कर पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। ब्लूबर्ड का अनुवाद ‘नील पंछी’ के नाम से तथा बाइबिल का हिन्दी अनुवाद किया। सेंट जेवियर्स कॉलेज राँची में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। वे ‘परिमल’ नामक संस्था के साथ भी जुड़े रहे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने अनेक प्रयास किए तथा लोगों को हिन्दी भाषा के महत्व को समझाने के लिए विभिन्न तर्क दिए।

4. इस पाठ के आधार पर फ़ादर कामिल बुल्के की जो छवि IMAGE उभरती है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- फ़ादर कामिल बुल्के का व्यक्तित्व सात्विक moral तथा आत्मीय intimacy था। ईश्वर के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। वे ईसाई पादरी होने के कारण हमेशा एक सफ़ेद चोगा धारण करते थे। गोरा रंग, सफ़ेद झाई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें थीं। बाहें सदा सभी को गले लगाने के लिए आतुर रहती थीं। वे

वात्सल्यता की मूर्ति थे। हमेशा एक मंद मुस्कान उनके चेहरे पर झलकती थी। दुःख से विरक्त लोगों को वे सांत्वना के दो बोल बोलकर शीतलता प्रदान करते थे। भारत देश से उन्हें बहुत प्रेम था।

5. लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है?

उत्तर:- फ़ादर बुल्के मानवीय करुणा की प्रतिमूर्ति थे। उनके मन में सभी के लिए प्रेम भरा था जो कि उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देता था। वे लोगों को अपने आशीर्षों blessings से भर देते थे। उनकी आँखों की चमक में असीम वात्सल्य तैरता रहता था। दुःख से विरक्त लोगों को वे सांत्वना के दो बोल बोलकर शीतलता प्रदान करते थे। किसी भी मानव का दुःख उनसे देखा नहीं जाता था। उसके कष्ट दूर करने के लिए वे यथाशक्ति प्रयास करते थे।

6. फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर:- संन्यासी की परंपरागत छवि ऐसी है कि वह घर संसार से विरक्त होकर भगवान् के भजन में लगा रहता है। उसे सांसारिक वस्तुओं व लोगों के प्रति कोई अनुराग नहीं होता। वह समाज से अलग अपने-आप में तल्लीन engrossed रहता है। वह अपने तथा अन्य लोगों के सुख-दुख से पूर्णतया विरक्त detached रहता है। परन्तु संन्यासी जीवन के परंपरागत गुणों से अलग भी फ़ादर बुल्के की भूमिका रही है; जैसे – इन्होंने संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् अपना अध्ययन जारी रखा, कुछ दिनों

तक ये कॉलेज में भी पढ़ाते रहे तथा अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेते रहे। वे धर्माचार की परवाह किए बिना अन्य धर्म वालों के उत्सवों-संस्कारों में भी घर के बड़े बुजुर्गों की भांति शामिल होते थे। इसलिए फ़ादर बुल्के की छवि परंपरागत traditional संन्यासियों से अलग है।

7.1 आशय स्पष्ट कीजिए –

नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है।

उत्तर:- फ़ादर कामिल बुल्के की मृत्यु पर उनके मित्र, परिचित और साहित्यिक मित्र इतनी अधिक संख्या में रोए कि उनको गिनना कठिन है उस समय रोने वालों की सूची तैयार करना कठिन था अर्थात् बहुत लोग थे। इसलिए रोने वालों के बारे में लिखना स्याही खर्च करने जैसा था।

7.2 आशय स्पष्ट कीजिए –

फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।

उत्तर:- हम फ़ादर कामिल को याद करते हैं तो उनका करुणा पूर्ण और शांत व्यक्तित्व सामने आ जाता है। फ़ादर को याद करने से दुःख होता है और यह दुःख एक उदास शांत संगीत की तरह हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ जाता है। उनके न रहने से मन उदासी से भर जाता है।

• रचना और अभिव्यक्ति

8. आपके विचार से बुल्के ने भारत आने का मन क्यों बनाया होगा ?

उत्तर:- फ़ादर कामिल बुल्के के मन में हिन्दी साहित्य, हिन्दी भाषा की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा थी। फ़ादर के मन में

शायद भारत के संतों, ऋषियों तथा आध्यात्मिक पुरुषों का आकर्षण भी रहा होगा साथ ही वे भारत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति भी आकर्षित थे। इसलिए वे भारत आना चाहते थे।

9. 'बहुत सुंदर है मेरी जन्मभूमि- रेम्सचैपल।' – इस पंक्ति में फ़ादर बुल्के की अपनी जन्मभूमि के प्रति कौन-सी भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं? आप अपनी जन्मभूमि के बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर:- फ़ादर कामिल बुल्के की जन्मभूमि 'रेम्सचैपल' थी। फ़ादर बुल्के के इस कथन से यह स्पष्ट है कि उन्हें अपनी जन्मभूमि से बहुत प्रेम था तथा वे अपनी जन्मभूमि को बहुत याद करते थे।

मनुष्य कहीं भी रहे परन्तु अपनी जन्मभूमि की स्मृतियाँ हमेशा उसके साथ रहती हैं। हमारे लिए भी हमारी जन्मभूमि अनमोल है। हमें अपनी जन्मभूमि की सभी वस्तुओं से प्रेम है। यहीं हमारा पालन-पोषण हुआ। अतः हमें अपनी मातृभूमि पर गर्व है। हम चाहें जहाँ भी रहे परन्तु ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेंगे जिससे हमारी जन्मभूमि को अपमानित होना पड़े।

EXAM ORIENTED EXTRA QUESTIONS

1. फ़ादर बुल्के की मृत्यु से लेखक आहत heartbroken क्यों था?

उत्तर-

फ़ादर बुल्के लोगों से सद्‌व्यवहार करते हुए हमेशा प्यार बाँटते रहे। उन्हें किसी पर क्रोध करते हुए लेखक ने नहीं देखा था। उनके मन में दूसरों के लिए सदैव सहानुभूति एवं करुणा भरी रहती थी। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु ज़हरबाद नामक कष्टदायी फोड़े से हुई। फ़ादर जैसे उदार महापुरुष की ऐसी मृत्यु के बारे में जानकर लेखक आहत हो गया।

2. लेखक ने फ़ादर का शब्द चित्र किस तरह खींचा है?

उत्तर-

लेखक ने फ़ादर का शब्द चित्र खींचते हुए लिखा है-एक लंबी पादरी के सफ़ेद चोगे से ढकी आकृति, गोरा रंग, सफ़ेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें, बाँहे खोलकर गले लगाने को आतुर, जिनका दबाव लेखक अपनी छाती पर महसूस करता है।

3. परिमल' क्या है? लेखक को परिमल के दिन क्यों याद आते हैं?

उत्तर-

‘परिमल’ इलाहाबाद की एक साहित्यिक संस्था है, जिसमें युवा

और प्रसिद्ध साहित्य प्रेमी अपनी रचनाएँ और विचार एक-दूसरे के समक्ष रखते थे। लेखक को परिमल के दिन इसलिए याद आते हैं, क्योंकि फ़ादर भी 'परिमल' से जुड़े। वे लेखक एवं अन्य साहित्यकारों के हँसी-मजाक में शामिल होते, गोष्ठियों में गंभीर बहस करते और लेखकों की रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते थे।

4. फ़ादर का सान्निध्य पाकर लेखक को ऐसा क्यों लगता कि वह किसी देवदारु वृक्ष की छाया में खड़ा हो ?

उत्तर-

फ़ादर का सान्निध्य और उत्सवों के अवसर पर फ़ादर बड़े भाई और पुरोहित के समान साथ खड़े होते और आशीर्वाद से भर देते। लेखक को उसका बच्चा और उसके मुँह में फ़ादर द्वारा अन्न डालना और उनकी आँखों में चमकता वात्सल्य अब भी याद है। यह वात्सल्य और सान्निध्य उसी तरह शीतलता से भर देता, जैसे देवदारु वृक्ष की शीतल छाया किसी यात्री को शीतलता से भर देती है।

5. फ़ादर की पारिवारिक पृष्ठभूमि और उनका स्वभाव भी किसी सीमा तक उन्हें संन्यासी बनाने में सहायक सिद्ध हुई'-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

फ़ादर के परिवार में उनके माता-पिता, दो भाई और एक बहन थे। उनके पिता व्यवसायी businessman थे। एक भाई बेल्जियम में ही पादरी हो गया था। दूसरा भाई काम करता था, उसका भरा-पूरा परिवार था। उनकी बहन जिद्दी और सख्त थी।

उसने । बहुत देर से शादी की। पिता और भाइयों के प्रति फ़ादर के मन में शुरू से ही लगाव न था, पर वे अपनी माँ को बराबर याद किया करते थे। इस तरह उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और स्वभाव उन्हें संन्यासी बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

6. संन्यासी बनने से पूर्व फ़ादर ने धर्म गुरु के सामने क्या शर्त रखी और क्यों?

संन्यासी बनने से पूर्व फ़ादर जब इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष की पढ़ाई कर रहे थे, तो उसे बीच में ही छोड़कर धर्मगुरु के पास गए और संन्यास लेने की बात कही। उन्होंने धर्मगुरु के सामने भारत जाने की शर्त रखी क्योंकि भारत की प्राचीन संस्कृति और यहाँ जन्म ले चुके महापुरुषों ने उनके मन में भारत के प्रति आकर्षण पैदा किया होगा।

7. भारत आने के लिए पूछने पर फ़ादर क्या जवाब देते थे?

फ़ादर बुल्के से अब पूछा जाता था कि आप भारत क्यों आए तो वे बड़ी सरलता से कह देते थे-प्रभु की इच्छा। वे यह भी बताते थे कि उनकी माँ ने बचपन में ही कह दिया था कि यह लड़का तो गया हाथ से। सचमुच माँ की यह भविष्यवाणी सत्य साबित होती गई। फ़ादर के मन में संन्यासी (पादरी) बनने की इच्छा बलवती होती गई और वे इंजीनियरिंग की पढ़ाई अधूरी छोड़कर भारत आ गए।

8. फ़ादर बुल्के ने भारत में बसने के लिए क्या आवश्यक समझा? उन्हें किस तरह हासिल किया?

अथवा

भारत आने पर फ़ादर द्वारा शिक्षा-दीक्षा प्राप्ति के सोपानों का क्रमिक वर्णन कीजिए।

उत्तर-

भारत आने पर फ़ादर ने सबसे पहले यहाँ शिक्षा-दीक्षा लेना आवश्यक समझा। इसके लिए उन्होंने 'जिसेट संघ' में पहले दो साल पादरियों के बीच धर्माचार की पढ़ाई की, फिर नौ-दस वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। इसके बाद उन्होंने कलकत्ता से बी०ए० किया और फिर इलाहाबाद से एम०ए० करने के उपरांत अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

9. 'संन्यासी होने के बाद भी फ़ादर का अपनी माँ से स्नेह एवं प्रेम कम न हुआ' स्पष्ट कीजिए।

लेखक और फ़ादर के घनिष्ठ संबंध थे। फ़ादर लेखक को अक्सर माँ की स्मृतियों में डूबा हुआ देखा करता था। फ़ादर की माँ की चिट्ठियाँ प्रायः उनके पास आया करती थीं। इन चिट्ठियों को वे अपने अभिन्न मित्र डॉ. रघुवंश को दिखाया करते थे। भारत बसने के बाद भी वे अपनी माँ और मातृभूमि को नहीं भूल पाए थे। इससे स्पष्ट है कि संन्यासी होने के बाद भी फ़ादर का अपनी माँ से स्नेह एवं प्रेम कम न हुआ।

10. फ़ादर बुल्के ने हिन्दी के उत्थान के लिए क्या-क्या प्रयास किए?

भारत में रहते हुए फ़ादर ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० किया। इससे ज्ञात होता है कि हिन्दी से उन्हें विशेष लगाव था। उन्होंने हिन्दी के उत्थान के लिए

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अकादमिक तर्क प्रस्तुत करते।

हर मंच से हिन्दी की दुर्दशा पर दुख प्रकट करते।

हिन्दी वालों द्वारा हिन्दी की उपेक्षा पर दुख प्रकट करते।

वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने के लिए चिंतित रहते।

11. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर फ़ादर की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ से फ़ादर बुल्के की निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान होता है

फ़ादर संकल्प के संन्यासी थे, मन के नहीं।

फ़ादर संबंध बनाकर उसे निभाना जानते थे।

फ़ादर अपने परिचितों एवं परिवार वालों के साथ स्नेहमय संबंध रखते थे।

वे सुख-दुख में परिवार के सदस्यों की भाँति खड़े नजर आते थे।

वे भारत और हिन्दी से असीम लगाव रखते थे।

12. फ़ादर पास्कल ने ऐसा क्यों कहा कि इस धरती से ऐसे और रत्न पैदा हों?

फ़ादर कामिल बुल्के वास्तव में रत्न थे। वे करुणा, सहानुभूति और ममत्व से भरपूर थे। वे सदा दूसरों में प्यार बाँटते थे।

क्रोध उन्हें छू भी न सका था। भारत आने के बाद वे भारत के होकर रह गए और यहीं की संस्कृति में रचबसकर रह गए। वे दुख में सांत्वना देते तथा सुख और उत्सव में बड़े भाई-सा आशीर्वाद देते। उनका साथ देवदारु वृक्ष की छाया जैसा होता। उनके मानवीय गुणों को याद कर फ़ादर पास्कल ने कहा कि धरती से ऐसे और रत्न पैदा हों।

13. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' नामक पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' नामक पाठ के माध्यम से हमें फ़ादर जैसे 'मानवीय करुणा के सागर' बुल्के की तरह करुणा एवं सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करने का संदेश मिलता है, वहीं यह भी संदेश मिलता है कि हमें अपनी मातृभूमि से असीम प्यार करना चाहिए। इसके अलावा हम भारतवासियों को विदेश में बसने का लोभ त्यागकर अपने देश की सेवा करनी चाहिए। हमें हिन्दी और भारत दोनों का ही भरपूर आदर करने का संदेश भी मिलता है।